पशुओं के नवजात बछड़ों की उचित देखभाल

पशुओं के नवजात बछड़ो, कटड़ों की गर्भनाल या नेवल कॉर्ड में सूजन आने को नेवल रोग या सूंडी पक जाना कहते हैं। ऐसा इन्फेक्शन गर्भ में विकास के दौरान आ सकता है या जन्म के बाद भी कई तरह के बैक्टीरिया के कारण हो सकता है। यह रोग जन्म के 2 से 5 दिन बाद अधिक होता है। पशुओ की लगभग सभी प्रजातियों के नवजातों में यह रोग हो जाता है।

नाभि रोग का कारण

यह कई प्रकार के बैक्टीरिया के कारण हो सकता है जैसे स्ट्रेप्टोकोकस, स्टेफीलोकॉकस, कौरीनेबैक्टेरियम, एस्चेरिचिआ कोलाई, साल्मोनेला इत्यादि।

इन्फेक्शन होने के कारण

- जिन दुधारू पशुओं में ब्याने से पहले मैट्रिटिस व प्लासेंटाइटिस होता है उनके नवजातों में यह रोग हो जाता है।
- जन्म के बाद नवजातों में आहार, सांस के जरिए या नाभि के रस्ते इन्फेक्शन हो सकता है. गाय के बछड़ों में तो अक्सर नाभि/ सूंडी के जरिए ही सूंडी पकना गोग होता है।
- गर्भनाल को गंदे चाकू से काटने, एंटीसेप्टिक नहीं लगाने, अन्य पशु द्वारा नाल को चूस लेने आदि से भी इन्फेक्शन हो सकता है।

लक्षण

- सूंडी सूजकर आकर में बड़ी हो जाती है।
- सूंडी के एक छोटे से सुराग से मवाद निकलती रहती है।
- पराय इस दौरान अम्बिलिकल हर्निया हो जाता है।
- नवजात को हल्का बुखार एवं सुस्ती हो जाती है।
- जोड़ों में सूजन हो जाती है।
- कभी-कभी सूजन इतनी हो जाती है कि जॉइंट कैप्सूल फैट जाता है।
- अधिक दिनों तक इलाज न होने पर जोड़ों में फाइब्रोसिस हो जाती है।
- कभी - कभी तो इन्फेक्शन जोड़ों से दिल, दिमाग व आंखों तक भी पहुंच जाता है।
- अगर इलाज जल्दी न हो तो टॉक्सीमिअ, सेप्टिसीमिया के कारण मृत्यु हो जाती है।

जांच

- रोग की हिस्ट्री व लक्षणों के आधार पर।
- जॉइंट से निकलने वाली मवाद से बैक्टीरिया की जांच करना।

इलाज

- इलाज के दौरान पहले ये जाँच लें कि अम्बिलिकल है या नहीं।
- यदि हर्निया है तो ऑब्सेस्स/फोड़े को न खोलें एवं ऑपरेशन कर हेर्नियल रिंग को बंद करें।
- अगर हर्निया नहीं है तो फोड़े में चीरा लगाकर मवाद निकाल दें एवं लाल दवाई के घोल से धोकर टिंचर आयोडीन लगायें।
- जोड़ों को गरम चीज से सकते रहें।
- एंटीबायोटिक ड्रग सेंसिटिविटी टेस्ट कराकर उपयुक्त एंटीबायोटिक 5-7 दिन तक लगाते रहें।

रोकथाम

- थाण को साफ-सुथरा रखें।
- जन्म के बाद नवजात की सूंडी को साफ चाकू या ब्लेड से काटकर एंटीसेप्टिक लगाएं।

●●●